Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- VII | ISSUE- I | JANUARY | 2020 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 6.293 | ISSN 2349-638x

सूरदास का वात्सल्स वर्णन

पूनम रानी
(एम.ए. हिन्दी नेट) शोधार्थी
- श्री जगदीश प्रसाद झबरामल टिबरेवाला विश्वविद्यालय
झुंझुनू (राजस्थान)

शोध आलेख सार :-

वात्सल्य का सजीव सरस और आकर्षक वर्णन करने वाला हिंदी में ही नही, विश्व में भी प्रख्यात कोई कवि हुआ है तो वह सूरदास ही है। सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट ब्रज की ओर स्थित सीही नामक गाँव में हुआ था। सूरदास हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के सगुण भक्ति शाखाके कृष्ण-भक्ति उपशाखा के महान कवि है। उनके वात्सल्य वर्णन की हम किसी से भी समानता नहीं कर सकते है। शैशवस्था से लेकर किशोरावस्था तक न जाने कितने चित्र उनके काव्य में प्रस्तुत किए गए है। उनमें केवल बाहरी रूपों ओर चेष्टाओं का ही विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन नहीं है, कवि ने बालको की अन्तः प्रकृति का भी पूरा प्रवेश किया है और अनेक भावों की सुन्दर स्वाभाविक व्यंजना की है। पुरूष होते हुए भी सूरदास के पास माँ का कोमल हृदय था। सांसारिक संबंधो से दूर रहते हुए भी सूर ने वात्सल्य का इतना मार्मिक चित्रण किया है कि उसे अनुभवगम्य मानना पड़ता है। सूरदास ने अपने इष्टदेव की बाल क्रीड़ाओ को मातृ हृदय से निहार कर जैसा मार्मिक संजीव, मनोमुग्धकारी चित्रण किया है। ऐसा वर्णन हिन्दी साहित्य में मिलना संभव नहीं, तो कठिन अवश्य है। सूर के काव्य को कोई भी पाठक या श्रोता पढ़कर या सुनकर भाव विभोर हो उठता था। हिन्दी विद्वानों के अनुसार सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनुपम एवं अद्वितीय है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार "सूरदास बाल-हृदय का कोना-कोना झाँक आए है।" उन्होने बंद आँखो से जो वात्सल्य वर्णन किया है। आगे आनेवाले कवियों की श्रृंगार व वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठन-सी जान पड़ती है। सूर -काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति था। 'भागवत' पुराण को उपजीव्य मान कर उन्होंने राधा-कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन 'सूरसागर' में किया था उन्होंने श्री कृष्ण के शैशव और कैशोर वयः की विविध लीलाओं का चयन किया सूर के भाव -चित्रण में वात्सल्य भांव को श्रेष्ठतम कहा जाता है।

मुख्य शब्द *- अनुभवगम्य, संस्कृति, श्रृंगार, मनोरम, अमंगल*

प्रस्तावना

सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है। 'भागवत' पुराण के दशम स्कंद के आधार पर उन्होंने कृष्ण-राधा की अनेक लीलाओं का वर्णन सूरसागर में किया है। सूरदास ने कृष्ण चरित्र के उन भावात्मक स्थलों को चुना है जो उनकी अंतरात्मा की गहरी अनुभूति पैठ सकी है। उन्होंने श्रीकृष्ण की भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं का वर्णन किया है। सूर की दृष्टि कृष्ण के लोकरंजन रूप पर ही अधिक रही है। लीला वर्णन में भी सूर ने भाव चरित्र पर अधिक जोर दिया है। भाव चरित्र में वात्सल्य को सबसे अधिक श्रेष्ठ दिखाया गया है। उन्होंने वात्सल्य के दोनों पक्षों का मार्मिक वर्णन किया है:- संयोग वात्सल्य व वियोग वात्सल्य

बाल चेष्टाओं एवं क्रीड़ाओं का वर्णनः-

बाल-चेष्टाएँ और क्रीड़ाएँ वात्सल्य रस से उद्दीयन का कार्य करती है। बाल चेष्टाओं और क्रीड़ाओं में मानों सूरदास ने अपनी प्रतिभा उड़ेल दी है। कहीं जोई-सोई गाकर लोरी सुना रही है तो कहीं पर कृष्ण खीझतें जा रहे हैं और मक्खन खा रहे हैं। बाल कृष्ण अत्यन्त सुंदर है। धुल से सने हुए बाल और कृष्ण घुटनों के बल चलते हुए बड़े सुन्दर लगते हैं। माता यशोदा उनकी छवि को देखकर उन पर मुग्ध हो जाती है कभी उनकी बातों को सुनकर अंदर ही अंदर मुसकराती है:-

"हौ बलि जाऊं छबीले लाल की ।
धुसर धूरि घुटुरूवर रेंगनि बोलन वचन रसाल की।।

वात्सल्य एवं श्रृंगार के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि गई वहाँ तक किसी भी अन्य कवि की नही गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'गीतावली' में बाललीला को इनकी देखादेखी में बहुत अधिक विस्तार देकर लिखा, पर बाल लीलाओं की जो चेष्टाएं सूर के

काव्य में अधिक प्रचुरता रही वही प्रचुरता तुलसी के काव्य में नहीं आयी। बालक चेष्टा के स्वाभाविक मनोहर चित्रों का इतना बड़ा भंडार और कहीं नहीं।

काहे को आरि करत मेरे मोहन!यो तुम आँगन लोटी?
जो माँगहु सो देहुँ मनोहर, यहै बात तेरी खोटी।।
सूरदास को ठाकुर ठाढ़ो हाय लकुट लिए छोटी।।

कृष्ण जीवन की भावनाओं की अभिव्यक्तिः-

कृष्ण जैसे-जैसे बड़े होते है, वैसे-वैसे उनमें बौद्धिकता का विकास होता है, परन्तु वे जिज्ञासु भी बन जाते हैं। सूर ने बाल-कृष्ण के हृदयस्थ, मनोभावों, बुद्धिचातुर्य, स्पर्धा, खीझ, अपराध करके उसे छिपाने तथा उसके बारे में कुशलता के साथ सफाई देने की प्रवृति आदि के बड़े मनोहारी चित्र अंकित किये हैं। बालक कृष्ण दूध पीने के लिए आनाकानी करते हैं और माता यशोदा उसे बहलाती है कभी फुसलाती है और दूध पिलाने का प्रयत्न करती है। माता यशोदा कहती है कि यदि तुम दूध पी लो गे तो तुम्हारी चोटी भी बढ़ जाएगी। दूध पीते हुए कृष्ण कहते है कि:-

मैया कबहि बढ़ेगी चोटी।
किति बार मोहि दूध पियत भई, यह अज हूँ है छोटी।।
तू जो कहति 'बल' की बेनी ज्यों, हवै है लाँबी मोटी।।

दूसरा चित्र कृष्ण की बात-सुलभ सफाई का है। एक बार श्रीकृष्ण ने मक्खन चुराकर खा लिया था और वह रंगे हाथों पकड़े भी गए थे, क्योंकि उनके मुख पर मक्खन लगा हुआ

था। माता यशोदा के पूछने पर कि तुमने मक्खन खाया है इस पर बाल-कृष्ण सफाई देते हुए कहते है कि:-

मैया मैं नहिं माखन खायों।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो।।

सूरदास ने बाल आक्रोश का भी सुन्दर चित्रण किया हैं बलराम कृष्ण को चिढ़ाते है, कि तू यशोदा का पुत्र नहीं है, तुझे तो मोल लिया गया है।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायों।
मोसौ कहत मोल को लीन्हो तू जसुमति कब जायो।

उत्सवों व संस्कारो के माध्यम से वात्सल्य :-

सूर को लोक हृदय की गहरी परख थी। बाल कृष्ण को एक सहज बालक बनाने और उसे गोकुल का लाड़ला बनाने के प्रसाय में सूर ने ब्रज की संस्कृति के माध्यम से बाल कृष्ण के रूप को चित्रित किया है। कृष्ण की वर्षगाँठ के अवसर पर माता यशोदा खुश होकर अपनी साखियों के साथ मंगल गीत गाती है, आँगन में मोतियों का चैक पुरवाती है और अन्य तैयारी करवाती है।

अरी मेरे लालन की आजु वरष गाँठ सबै,
साखिन कौं बुलाइ मंगल-गान करावौं।
चंदन आँगन लिपाई मुतियन चैके पुराई,
उमंग अंगनि आनंद सौं तूर बजाओं।।

वात्सल्य का वियोग-पक्ष :-

श्रीकृष्ण के मथुरा-गमन पर :-

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर यशोदा माता का हृदय अपने पुत्र की याद में विकल होने लगता है। उन्हें लगता है कि कृष्ण की आदतों से वे जितनी परिचित थीं उतना और कोई उसे नहीं जानता अतः देवकी को संदेश भेजती हुई कहती है:-

संदेसो दवेकी सों कहियो।
हौं तो धाय तिहारे सुत की कृपा करति ही रहियौ।
जदपि टेव तुम जानति हौवे हौ तऊ मोहि कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैते माखन रोटी भावै।।

मथुरा से नंद के अकेले लौटने पर:-

माता का हृदय बड़ा कोमल होता है तथा यहाँ पर यशोदा माता के मातृ-हृदय की वात्सल्यमयी झाँकी तन्मयता के साथ अंकित की है, जिस समय नंद बावा मथुरा से अकेले लौटते है और माता यशोदा उन्हें अकेला देखकर आकुल हो उठती है। उस क्षण माता यशोदा के हृदय से वात्सल्य रस फूट पड़ता है। वह सारा दोष नंद बावा के सिर पर मंढती है तो नंद झुँझला उठते हैं। यशोदा को साफ-साफ कह देते हैं, तुम्हीं के कारण वह वापस नहीं आया है। तुम बात-बात पर उसकी पिटाई कर देती थी। अब वो रूठकर मथुरा चला गया है।

श्रीकृष्ण के मथुरा में बसने पर :-

माता यशोदा यह भली प्रकार जानती है कि मथुरा में श्रीकृष्ण के देखभाल करने वाले वासुदेव व देवकी है फिर भी अमंगल की आशंका उसे घेरे रहती है वह कृष्ण के प्रति हल पल चिंतित रहती है और पथिक के हाथों संदेश भेजती है:-

"प्रातः उठत तुम्हारे कान्य, माखन रोटी खावै।
संदेसो देवकी सौं कहियों,
हौं तो धाय तिहारे सुत की,
कृपा करत हि रहियो।।"

निष्कर्ष :-

इस प्रकार वात्सल्य का बड़ा ही सुन्दर वर्णन सूर ने किया है जिसमें बाल चेष्टाओं व क्रीड़ाओं के अतिरिक्त मातृ-हृदय की भावुकता की मनोरम अभिव्यक्ति हुई है। वात्सल्य की दृष्टि से सूर ने जितनी दूर तक दौड़ लगाई और जितनी गहराई से अंकन किया हैं वहाँ तक अन्य कवि नहीं पहुँच पाया है। श्रीकृष्ण के मथुरा गमन के समय यशोदा का चरित्र और भी उत्कर्ष हो जाता है। सूर ने वात्सल्य का इतना क्रमवार वर्णन किया है कि शायद ही वात्सल्य का कोई कोना अछूता रह गया हो। पदों की पुनरावृति भी सूर इसलिए करवाते है कि कोई भी भाव न छूट जाए। कृष्ण की सारी लीलाएँ मानवीय होने के कारण विश्वसनीय है। डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा के अनुसारः-उनके काव्य में हम यह देखते है कि उन्होंने वात्सल्य भावों को कृष्ण-लीला के वर्णन में ऐसा चित्रित किया है जैसा कभी कोई और कवि नही कर सका।

सन्दर्भ :-

१. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास पृष्ट - १२२-१२३
२. डॉ० अशोक तिवारी-प्रतियोगिता साहित्य सीरीज भाग २ - पृष्ट १२
३. डॉ० नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास - १८६
४. सूरदास, सूरसागर पृष्ट - ७६३, ८३३, ३७४३
५. ब्रजेश्वर वर्मा, सूरदास पृष्ट - ५८